ग्रामीण विकास विभाग
बिहार सरकार

अन्दर के पृष्ठों में...

सतत् जीविकोपार्जन योजना से
मिली नई दिशा और गरिमापूर्ण जीवन
(पृष्ठ – 02)

सतत् जीविकोपार्जन योजना से
मिली नई दिशा
(पृष्ठ – 03)

सनोखा देवी:
सतत् जीविकोपार्जन योजना से
मिली आर्थिक स्वतंत्रता
(पृष्ठ – 04)

सतत् जीविकोपार्जन योजना

एक नई राह

माह – अक्टूबर 2024 ।। अंक – 39

प्रभावी परियोजना प्रबंधन से सफलता की नई कहानी

बिहार सरकार की महत्वाकांक्षी योजना सतत् जीविकोपार्जन योजना ने एक नई मिसाल कायम की है। जीविका, ग्रामीण विकास विभाग द्वारा इस योजना का सफल क्रियान्वयन किया जा रहा है। प्रारंभ में एक लाख परिवारों को इस योजना से जोड़ने का लक्ष्य रखा गया था, लेकिन जीविका ने निर्धारित समय सीमा में 1 लाख 25 हजार से अधिक परिवारों को जोड़कर एक अद्वितीय सफलता हासिल की है। राज्य सरकार द्वारा बर्ष 2021 में निर्धारित लक्ष्य को बढ़ाकर 2 लाख किया गया, जिसके बिरुद्ध अबतक 2.01 लाख परिवारों को इस योजना से जोड़ा गया है।

इस योजना के माध्यम से अत्यंत निर्धन परिवारों को गरीबी के कुचक्र से बाहर निकलने में मदद मिल रही है। इसकी सफलता के प्रमुख कारणों में मजबूत प्रबंधन प्रणाली, पारदर्शिता, नियमित निगरानी और सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का कुशल उपयोग शामिल हैं। जीविका की समर्पित और प्रशिक्षित टीम इस योजना के क्रियान्वयन में सक्रिय रूप से कार्यरत है। इसके अलावा सहयोगी संस्थाओं से प्रशिक्षण और तकनीकी सहयोग भी प्राप्त हो रहा है।

परियोजना प्रबंधन के प्रमुख अवयव

निगरानी एवं अनुश्रवण

सतत् जीविकोपार्जन योजना का क्रियान्वयन निरंतर रूप से पारदर्शी ढंग से किया गया है। इस योजना की निरंतर निगरानी के लिए ग्राम संगठनों द्वारा लक्षित परिवारों की पहचान से लेकर जीविकोपार्जन संवर्धन हेतु परिसंपत्ति हस्तांतरण, वित्त पोषण इत्यादि का नियमित अनुश्रवण किया जाता है। पारिवारिक सर्वेक्षण में निर्धारित प्रपत्रों का उपयोग कर परिवारों से जुड़ी जानकारी एकत्र की जाती है, जिससे लाभार्थियों की पात्रता की जांच करना संभव हो पाता है।

सूचना प्रबंधन प्रणाली

जीविका राज्य कार्यालय द्वारा विकसित सूचना प्रबंधन प्रणाली में लक्षित परिवारों की सम्पूर्ण जानकारी और परियोजना की प्रगति के आंकड़े दर्ज किए जाते हैं। इस प्रणाली में परिवारों की विवरणी, आर्थिक और सामाजिक स्थिति, सूक्ष्म नियोजन और व्यवसाय संचालन से संबंधित आंकड़े सम्मिलित होते हैं। यह प्रणाली प्रबंधन को योजना की निगरानी और मूल्यांकन में सुविधा प्रदान करती है।

मानव संसाधन

सतत् जीविकोपार्जन योजना के सफल कार्यान्वयन के लिए राज्य, जिला, और प्रखंड स्तर पर समर्पित कर्मियों को पदस्थापित किया गया है एवं बेहतर टीम का निर्माण किया गया है। राज्य स्तर पर एक टीम सभी गतिविधियों की निगरानी करती है, जबकि जिला स्तर पर नोडल और सलाहकार कार्यरत हैं। पंचायत स्तर पर मास्टर रिसोर्स पर्सन और सामुदायिक समन्वयक लक्षित परिवारों को प्रशिक्षित करते हैं और उन्हें व्यवसाय के चयन में सहयोग प्रदान करते हैं।

वित्तीय प्रबंधन और खरीदारी

इस योजना के तहत वित्तीय प्रबंधन की एक मजबूत प्रणाली विकसित की गई है। सभी निधियाँ एवं परिसंपत्ति ग्राम संगठन द्वारा सीधे लाभार्थियों को हस्तांतरित की जाती हैं, जिससे योजना का लाभ सीधे उन तक पहुँचता है। सामुदायिक खरीदारी की नियमावली लागू कर, खरीदारी की प्रक्रिया में पारदर्शिता सुनिश्चित की गई है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना ने न केवल बिहार में गरीब परिवारों की आर्थिक स्थिति को सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, बल्कि परियोजना प्रबंधन के उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। यह योजना भविष्य में भी अत्यंत निर्धन परिवारों के लिए प्रेरणा स्रोत बनेगी। बिहार सरकार की यह पहल निश्चित रूप से ग्रामीण विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से मिली नई दिशा और गरिमापूर्ण जीवन

नौरोज बेगम, जो पहले मजदूरी करके अपना और अपने चार बच्चों का गुजारा करती थीं, परंतु आज सतत् जीविकोपार्जन योजना की मदद से एक नई दिशा में आगे बढ़ रही हैं। नौरोज बेगम किशनगंज जिला के बहादुरगंज प्रखंड के समेशर पंचायत की निवासी हैं। उनकी शादी कम उम्र में हुई थी और पति के असमय निधन ने उनके जीवन को दयनीय बना दिया था। कठिनाई के बीच, नौरोज ने कुछ समय तक दूसरों के खेतों में मजदूरी करके किसी तरह जीवन बिताया, लेकिन नियमित आय न मिलने के कारण उनकी स्थिति लगातार बिगड़ती गई।

उनकी स्थिति को देखते हुए उन्हें सतत् जीविकोपार्जन योजना से जोड़ा गया। इस योजना के तहत मिली वित्तीय सहायता ने उनके जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ दिया। वर्ष 2021 में, उन्होंने अपनी किराना दुकान खोली, जो उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार लाने का एक प्रमुख स्रोत है। आज उनकी दुकान से प्रति माह लगभग 10 से 12 हजार रुपये की आमदनी होती है, जिससे न केवल उनका जीवन स्तर सुधरा है, बल्कि वे अपने चारों बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलवा रही हैं।

नौरोज ने अपनी व्यवसायिक गतिविधियों का विस्तार करते हुए 11 बकरियाँ और 3 गायें भी पाली हैं। इसके साथ हीं, उन्होंने 2 बीघा जमीन पट्टे पर लेकर खेती भी शुरू की है। पशुपालन और खेती–बाड़ी से उन्हें अच्छी आमदनी हो रही है जिससे उनकी वित्तीय स्थिरता बढ़ रही है।

वर्तमान में, नौरोज के पास 1 लाख रुपये से अधिक की पूँजी है और बैंक में भी 10 हजार रुपये से अधिक जमा है। नौरोज अब अपने परिवार की जरूरतों को पूरा कर रही हैं और एक गरिमापूर्ण जीवन व्यतीत कर रही हैं। उनका संघर्ष और सफलता अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है जो आर्थिक स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ना चाहती हैं।

श्रृंगार दुकान और कृषि से बनी आर्थिक स्वतंत्रता की मिसाल

लक्ष्मी देवी, भोजपुर जिला अंतर्गत जगदीशपुर प्रखंड की निवासी हैं। वर्ष 2020 में, लक्ष्मी दीदी की खराब आर्थिक स्थिति को देखते हुए मिलन जीविका महिला ग्राम संगठन द्वारा सतत् जीविकोपार्जन योजना के अंतर्गत इनका चयन किया गया।

लक्ष्मी देवी को व्यवसाय करने के लिए प्रेरित किया गया। उन्होंने श्रृंगार की दुकान खोलने की इच्छा व्यक्त की। इसके बाद, उन्हें व्यवसायिक कौशल बढ़ाने के लिए क्षमतावर्धन एवं उद्यम विकास का प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के बाद, ग्राम संगठन ने उन्हें श्रृंगार दुकान स्थापित करने के लिए 10,000 रुपये की विशेष निवेश निधि प्रदान की। इसके अतिरिक्त, जीविकोपार्जन निवेश निधि के तहत 20,000 रुपये का मनिहारी सामान खरीदकर दिया गया। व्यवसाय से आमदनी होने तक लक्ष्मी को सहयोग के रुप में उन्हें जीविकोपार्जन अंतराल राशि के तहत सात माह तक 1000 रुपये प्रति माह दिए गए।

आज, लक्ष्मी देवी की मासिक आमदनी 10000 से 12000 रुपये है। उनकी दुकान में कुल 51,700 रुपये की संपत्ति है । बचत के लिए वह प्रतिदिन 10 रुपये अलग से जमा करती हैं।

लक्ष्मी देवी ने श्रृंगार दुकान के अलावा कृषि कार्य भी शुरू की है। उन्हें विभिन्न सरकारी योजनाओं जैसे आवास, राशन कार्ड, सुरक्षा बीमा योजना, नल जल योजना, शौचालय, और आयुष्मान कार्ड का लाभ मिल भी रहा है। पहले, उनके पास बैंक में बचत करने की कोई जरिया नहीं थी, लेकिन अब उनके बैंक खाता में 10,000 रुपये जमा है।

इसके अलावा, लक्ष्मी के बच्चे पहले स्कूल नहीं जाते थे, लेकिन अब वे स्कूल जाने लगे हैं। इस प्रकार, लक्ष्मी देवी ने श्रृंगार दुकान और कृषि के माध्यम से न केवल अपनी आर्थिक स्थिति सुधार ली है, बल्कि अपने बच्चों का भविष्य भी उज्ज्वल बना दिया है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से मिली नई दिशा

जयरानी देवी, शेखपुरा जिला के घाटकुसुम्भा प्रखंड के डीहकुसुम्भा गाँव की निवासी हैं। वे प्रगति जीविका महिला ग्राम संगठन के भवानी जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी हैं और एक अत्यंत निर्धन परिवार से आती हैं। उनके पति का वर्ष 2018 में अचानक निधन हो गया, जिससे जयरानी पर संकट के पहाड़ टूट पड़े। उनके पास केवल एक पुत्री थी, जिससे उन्हें और भी अधिक जिम्मेदारियों का सामना करना पड़ा।

जयरानी के परिवार में गरीबी ने गहरा असर डाला, और उन्हें यह समस्या सामना करना पड़ा कि कभी काम मिलता तो घर में खाना बनता, नहीं तो उन्हें भूखा रहना पड़ता। वे जब दूसरों के घरों में काम करती थीं, तब ही उनके परिवार का गुजारा होता था।

एक दिन, सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत संसाधन सेवियों की एक टीम गाँव में सर्वे एवं गृह भ्रमण कर रही थी। दुर्भाग्यवश, जयरानी देवी का नाम किसी ने नहीं लिया। लेकिन गाँव के किसी व्यक्ति ने उनके बारे में बताया, और सर्वे टीम वापस जाकर जयरानी के बारे में जानकारी ली।

ग्राम संगठन की बैठक में उन्हें योजना के बारे में विस्तार से समझाया गया और विशेष निवेश निधि के रूप में 10,000 रुपये व्यवसाय स्थापित करने हेतु दिए गए। इसके बाद, जीविकोपार्जन निवेश निधि से 20,000 रुपये का छोहाड़ा और किशमिश का व्यवसाय शुरू करने के लिए सामान प्रदान किया गया। साथ हीं सात महीने तक उन्हें 1,000 रुपये प्रति माह की जीविकोपार्जन अंतराल सहायता राशि प्रदान की गयी।

अब जयरानी देवी छोहाड़ा और किशमिश का व्यवसाय कर रही हैं। उनकी दैनिक बिक्री 4,000 से 5,000 रुपये होती है, जिससे उन्हें प्रति दिन 400 से 500 रुपये का लाभ होता है। अब वह अपने परिवार की जिम्मेदारियों को अच्छे से निर्वहन कर रही है। वह पैसे जमा कर धीरे–धीरे अपना घर भी बनवा रही है।

वर्ष 2023 में, उन्हें दूसरी किस्त के रूप में 27,000 रुपये मिले, जिससे उन्होंने अपनी दुकान के लिए और भी सामान खरीदा। इस प्रकार, सतत् जीविकोपार्जन योजना ने जयरानी देवी के जीवन में खुशहाली लाई है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से मिली खुशहाली

मुंगेर जिला के संग्रामपुर प्रखंड के कटियारी पंचायत की रहने वाली मीना किस्कु अनुसूचित जनजाति समुदाय से हैं। समूह में जुड़ने से पहले वह एक सामान्य गृहिणी थीं, जिनका मुख्य पेशा जंगल पर आधारित था। मीना अपने परिवार के लिए लकड़ी काटकर बेचती थीं और देशी शराब बनाकर भी कुछ आय करती थीं। लेकिन बिहार में शराबबंदी के बाद शराब बनाने और बेचने का काम बंद हो जाने से उनके परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत दयनीय हो गई।

सतत् जीविकोपार्जन योजना की शुरुआत बिहार में शराबबंदी के बाद की गई, जिसका उद्देश्य गरीब परिवारों को जीविकोपार्जन गतिविधियों से जोड़ना था। पंचायत में योग्य महिलाओं की पहचान की जा रही थी। मीना किस्कु की स्थिति को देखकर सामुदायिक संसाधन सेवी दल ने उनका चयन इस योजना के लिए किया। योजना से जुड़ने के बाद मीना को क्षमतावर्धन हेतु तीन दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के बाद, उन्होंने बकरी पालन करने की इच्छा जाहिर की।

ग्राम संगठन के माध्यम से मीना को विशेष निवेश निधि मद से 10,000 रुपये और जीविकोपार्जन निवेश निधि से 16,000 रुपये की बकरी खरीद कर दी गयी। इसके अलावा, उन्हें योजना के तहत सात महीने तक हर महीने 1,000 रुपये जीविकोपार्जन अंतराल राशि मिला। मीना ने पूरे मनोयोग से बकरियों की देखभाल की जिससे धीरे–धीरे उनकी संख्या बढ़ने लगी। आज मीना किस्कु 12 बकरियाँ पाल रही हैं। उनकी मासिक औसतन आय 4,000 से 5,000 रुपये है। इस आमदनी से वह अपने बच्चों की पढ़ाई भी करवा रही हैं और परिवार के साथ खुशीपूर्वक जीवन व्यतीत कर रही हैं। अब मीना दीदी किसी पर निर्भर नहीं हैं, वह स्वयं अपनी मेहनत से अपने परिवार का भरण–पोषण कर रही है जिससे उनकी स्थिति में काफी सुधार आया है।

सनोखा देवी: सतत् जीविकोपार्जन योजना से मिली आर्थिक स्वतंत्रता

सनोखा देवी, कटिहार जिला के रौनिया पंचायत के मुसहरी टोला की निवासी हैं। परिवार में उनके पति के अलावा दो बेटा और पांच बेटियाँ हैं। परिवार को आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ता था, जिस कारण उनके बच्चों की शिक्षा भी अधूरी रह गई। उनके पास खुद का कोई खेती योग्य जमीन नहीं था। उनके पति बेरोजगार थे। इसलिए सनोखा ने देशी शराब बनाकर बेचने का काम शुरू किया। देशी शराब की बिक्री कर वह अपने परिवार का पालन–पोषण करती थी। लेकिन जब राज्य में शराबबंदी लागू हुई, तो उनका यह रोजगार भी खत्म हो गया। जिससे उनकी आर्थिक स्थिति और भी खराब हो गई। इसके उपरांत सनोखा को मजदूरी पर निर्भर रहना पड़ा। लेकिन कभी काम मिलता था तो कभी नहीं भी मिलता था। इस अस्थिरता ने उनके जीवन को अत्यंत कठिन बना दिया। स्थिति इतनी खराब हो गई थी कि वे अपने बच्चों को स्कूल भी नहीं भेज पा रही थीं।

सनोखा देवी की दयनीय स्थिति को देखकर ग्राम संगठन ने उन्हें सतत् जीविकोपार्जन योजना अंतर्गत चयन किया। शुरुआत में सनोखा को इस परियोजना का लाभ उठाने में संदेह था। उन्हें डर था कि बाद में पैसे की वापसी का दबाव बनाया जाएगा। लेकिन ग्राम संगठन के प्रयासों के बाद, सनोखा ने योजना का लाभ लेने के लिए सहमति दी। उन्हें तीन दिवसीय क्षमतावर्धन एवं उद्यमिता विकास प्रशिक्षण प्रदान किया गया, जिससे उन्हें व्यवसाय शुरू करने का ज्ञान प्राप्त हुआ।

उन्हें ग्राम संगठन द्वारा योजना के तहत विशेष निवेश निधि की 10,000 रुपये, जीविकोपार्जन निवेश निधि के तहत 20000 रुपये की मनिहारी दुकान खोलने हेतु सामग्री दी गई। इसके अलावा जीविकोपार्जन अंतराल सहायता राशि के तहत सात माह तक प्रति माह 1,000 रुपये मिला। इस सहायता ने सनोखा को एक नया जीवन देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अपनी मनिहारी दुकान के जरिए अपने जीवनयापन की नई शुरुआत की और धीरे–धीरे अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने लगीं।

सनोखा देवी ने बकरी पालन भी शुरू किया, जिससे उनकी आय में इजाफा हुआ। वर्तमान में उनकी कुल व्यवसायिक संपत्ति 51,500 रुपये है। उन्होंने बैंक में अपने बचत खाते में 6000 रुपये जमा की हैं। साथ ही उन्हें विभिन्न सरकारी योजना जैसे राशन की सुविधा, आवास और बीमा का लाभ भी प्राप्त किया है।

सनोखा देवी की जीवन में आए बदलाव इस बात का प्रमाण है कि जब किसी को सही दिशा में समर्थन मिलता है, तो वे अपने जीवन को बदलने में सक्षम होते हैं। सतत् जीविकोपार्जन योजना ने उन्हें न केवल आर्थिक स्वतंत्रता दी है, बल्कि उनकी आत्मसम्मान और आत्मविश्वास को भी बढ़ाया है।

अब, सनोखा देवी अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाने के लिए भी सक्षम है। उनके जीवन में आई यह परिवर्तन निश्चित रूप से प्रेरणादायक है और यह साबित करता है कि कठिनाइयों का सामना करते हुए भी सफलता हासिल की जा सकती है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी – कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार